हिन्दी साप्ताहिक

R.N.I.NO. UPHIN/2015/67882

भोजपुरी राज्य संदेश

वर्ष : 11 अंक : 44 लखनऊ, शनिवार, 31 अक्टूबर, 2026 पृष्ठ : 8 मूल्य : 1.00 रुपये

स्पीड, स्केल और कनेक्टिविटी के मंत्र ने बदली यूपी की तस्वीर-योगी

2017 से पहले उत्तर प्रदेश में विकास की स्थिति थी अत्यंत दयनीय

लखनऊ (यूएनएस)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स के जरिये प्रदेशवासियों को 2017 के पश्चात सड़क, रेल, मेट्रो व एयर कनेक्टिविटी की अभूतपूर्व बढ़ोतरी से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि स्पीड, स्केल और कनेक्टिविटी के मंत्र ने उत्तर प्रदेश की तस्वीर बदल दी है। मुख्यमंत्री ने लिखा कि सड़क, रेल और हवाई संपर्क केवल दूरियां नहीं घटाते, बल्कि ये सुविधा, समय की बचत और समृद्धि की नई संभावनाएं लेकर आते हैं, लेकिन वर्ष 2017 से पहले उत्तर प्रदेश में विकास की इन जीवन रेखाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में डबल इंजन सरकार ने स्पीड, स्केल और कनेक्टिविटी के मंत्र से इस तस्वीर को बदला है। भाजपा की डबल इंजन सरकार बनने से पहले देश की सबसे बड़ी आबादी वाले प्रदेश में मात्र डेढ़ एक्सप्रेस-वे थे। आज प्रदेश में 10 एक्सप्रेस-वे संचालित हैं। तब हवाई सेवाएं चुनिंदा शहरों तक सिमटी थीं, लेकिन आज 12 घरेलू और 5 अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों से प्रदेश की उड़ान नई ऊंचाइयों पर है। तब प्रदेश के एक भी शहर में मेट्रो नहीं चलती थी। वहीं, आज 7 शहरों में मेट्रो जनजीवन को नई गति दे रही है। इस परिवर्तन से किसान की उपज को बड़ा बाजार और उद्यमिता को नए अवसर मिल रहे हैं। युवाओं के लिए शिक्षा और रोजगार तक पहुंच सुगम हो रही है। कामकाजी लोगों का समय बच रहा है। पर्यटन का विस्तार भी हो रहा है, जिससे स्थानीय परिवारों की आजीविका को नई शक्ति मिल रही है। विकास की यह गति आज गांव से कस्बे और कस्बे से शहर तक नागरिकों के जीवन को बदल रही है। हर क्षेत्र को अवसर, हर उद्यम को सामर्थ्य और हर परिवार के जीवन में बढ़ती खुशहाली नए भारत के नए उत्तर प्रदेश की नई पहचान है।



आजम खां और बेटे अब्दुल्ला आजम को बड़ी राहत

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश की राजनीति से जुड़ी बड़ी खबर सामने आई है। पूर्व कैबिनेट मंत्री मोहम्मद आजम खां और उनके बेटे, पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम खान को दो पैन कार्ड मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट से राहत मिली है। दोनों की याचिकाओं पर सुनवाई के बाद अदालत ने जमानत से संबंधित राहत प्रदान की है। इस मामले में दोनों की दोषसिद्धि पर रोक लगाने और सजा निलंबित करने की मांग भी की गई थी।

दो पैन कार्ड मामले में आजम खां और अब्दुल्ला आजम की ओर से इलाहाबाद हाई कोर्ट में याचिकाएं दाखिल की गई थीं। याचिकाओं में दोषसिद्धि पर रोक लगाने, सजा निलंबित करने और अंतरिम जमानत दिए जाने की मांग की गई थी। अदालत ने मामले में दलीलें सुनने के बाद अपना आदेश सुरक्षित रख लिया था। अब अदालत से मिली राहत को दोनों के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हालांकि, जमानत मिलने और दोषसिद्धि पर रोक लगने के कानूनी प्रभाव अलग-अलग होते हैं। दोषसिद्धि पर रोक से संबंधित याचिका पर अदालत का स्पष्ट आदेश ही इस पहलू की स्थिति तय करेगा। आजम खां समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं में रहे हैं और उत्तर प्रदेश की राजनीति में उनका प्रभाव लंबे समय से रहा है। उनके बेटे अब्दुल्ला आजम भी विधायक रह चुके हैं। ऐसे में इस मामले में हाई कोर्ट से मिली राहत राजनीतिक और कानूनी, दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण मानी जा रही है। दो पैन कार्ड से जुड़े मामले में निचली अदालत के फैसले के खिलाफ कानूनी चुनौती दी गई थी। हाई कोर्ट में सुनवाई के दौरान बचाव पक्ष ने राहत की मांग की, जबकि मामले का अंतिम कानूनी परिणाम अदालत के आदेश और आगे की न्यायिक प्रक्रिया पर निर्भर करेगा।

रामलीला मार्च में शामिल होने की अपील

नयी दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सासंद राहुल गांधी ने गुरुवार को लोगों से 1 नवंबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में इंडिया ब्लॉक के मार्च में शामिल होने की अपील की है। उन्होंने इसे लोकतंत्र बचाने, वोट चोरी रोकने और संविधान की रक्षा के लिए एक आंदोलन बताया। सोशल मीडिया मंच एक्स पर हिंदी में जारी एक वीडियो संदेश में राहुल गांधी ने कहा कि यह मार्च किसी खास राजनीतिक दल के लिए नहीं, बल्कि भारत की आत्मा के लिए है। उन्होंने वीडियो में कहा, चलो दिल्ली रामलीला मार्च लोकतंत्र बचाने का, वोट चोरी रोकने का और संविधान बचाने का मार्च है। यह किसी एक राजनीतिक पार्टी का मार्च नहीं है, यह हिंदुस्तान की आत्मा का मार्च है। उन्होंने कहा, जो भी लोग प्रधानमंत्री, केंद्रीय गृह मंत्री और मुख्य चुनाव आयुक्त से तंग हैं। जो भी लोकतंत्र बचाना चाहते हैं और संविधान की रक्षा करना चाहते हैं, सभी आइए। एक ही प्रोटेस्ट है।

किरेन रीजीजू का नसीरुद्दीन शाह पर निशाना, बोले, उनके विचार भारतीय लोकतंत्र के लिए बेहद हानिकारक



नयी दिल्ली। केंद्रीय मंत्री किरेन रीजीजू ने नसीरुद्दीन शाह को एक खतरनाक शहरी दिमागी नक्सली करार देते हुए कहा है कि उनके विचार भारतीय लोकतंत्र के लिए बेहद हानिकारक हैं। शाह ने एक वीडियो पोस्ट करके केंद्र सरकार पर शिक्षा व्यवस्था को नष्ट करने की कोशिश करने का आरोप लगाया है। अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री रीजीजू ने बुधवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि वह शाह का सम्मान करते थे, लेकिन उन्हें शाह के असली चरित्र के बारे में बहुत देर से पता चला।

मंगलवार को फेसबुक पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में, काफी गुस्से में दिख रहे शाह ने जामिया मिलिया इस्लामिया में छात्र संघ को बहाल करने की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे विद्यार्थियों का समर्थन किया। उन्होंने खुद को दिमागी नक्सल बताया। उन्होंने भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद करने और देश के युवाओं का हौसला तोड़ने की कोशिश करने का आरोप लगाया। उन्होंने शिदमागी नक्सल लिखी एक पिन भी लगा रखी थी, जिसे उन्होंने कैमरे के सामने दिखाया। रीजीजू ने अभिनेता की आलोचना करते हुए कहा, मुझे लगा था कि नसीरुद्दीन शाह बस एक अभिनेता हैं। मैं उनका सम्मान करता था और उन्हें पसंद भी करता था... मुझे कभी पता नहीं था कि वह एक खतरनाक शहरी दिमागी नक्सली हैं। उन्होंने कहा, मुझे उनके असली चरित्र के बारे में बहुत देर से पता चला। (उनके विचार) भारत के लोकतंत्र के लिए बेहद हानिकारक हैं। दिमागी नक्सल शब्द का इस्तेमाल सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में किया था। उन्होंने दिमागी नक्सलियों को ऐसे लोगों के रूप में बताया, जो कथित तौर पर तंत्र में गहराई तक पैठ बना चुके हैं समाज के लिए खतरा बने हुए हैं। शिवसेना नेता शायना एनसी ने भी बृहस्पतिवार को पीटीआई-वीडियो से बातचीत में शाह की टिप्पणी पर सवाल उठाए।

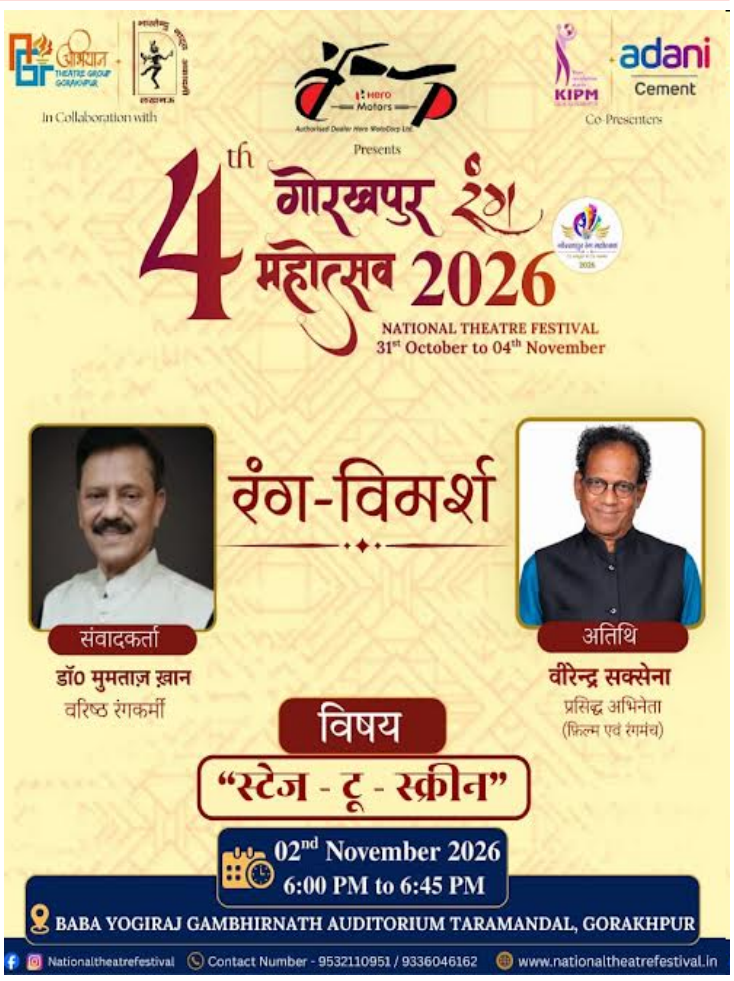
उन्होंने कहा, सवाल यह है कि क्या नसीरुद्दीन शाह सरफ़रोश के एसीपी राठौड़ हैं या गुलाम हसन? वह शहरी नक्सलवाद, श्टुकड़े-टुकड़े गैंगश् के समर्थन और देश-विरोधी गतिविधियों के बारे में बात करते हैं। श्रीमान, पूरे सम्मान के साथ आपसे मेरा सवाल यह है कि क्या आप भारत के समर्थन में नारे लगाने में विश्वास रखते हैं या भारत-विरोधी नारों में?

आमिर खान अभिनीत एक्शन ड्रामा सरफ़रोश में शाह ने खलनायक, गुप्त एजेंट गुलफ़ाम हसन का किरदार निभाया था। वर्ष 1999 की इस सुपरहिट फिल्म में खान एसीपी अजय सिंह राठौड़ की मुख्य भूमिका में थे। शाह (76) अक्सर वीडियो पोस्ट करके विद्यार्थियों से जुड़े मुद्दों पर अपना समर्थन जताते रहे हैं। उन्होंने जुलाई में नीट परीक्षा में हुई गड़बड़ियों को लेकर कॉकरोच जनता पार्टी की अगुवाई में हुए विरोध-प्रदर्शन को सरकार द्वारा संभालने के तरीके की भी आलोचना की है। पिछले हफ्ते, शाह ने सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट के उन विद्यार्थियों के समर्थन में भी अपनी आवाज उठाई, जो परिसर में हुई हिंसक घटनाओं को लेकर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हैं।

सम्पादकीय

पर्यावरण अनुकूल पर्यटन

इसमें दो राय नहीं कि देश के पहाड़ी राज्यों के लिये पर्यटन उद्योग अब अर्थव्यवस्था को गति देने का एक सशक्त माध्यम बन गया है। कह सकते हैं तमाम पारिस्थितिकीय चुनौतियों के चलते एक मजबूरी भी बन गया है। लेकिन इसमें दो राय नहीं है कि राजस्व सृजन और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के लिये, राज्य सरकारें एक कठिन राह पर चलना सीख रही हैं। दरअसल, पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और संरक्षित क्षेत्रों में यह चुनौती ज्यादा बड़ी है। यही वजह है कि हिमाचल प्रदेश के संवेदनशील स्पीति के इलाके में प्रदेश के वन विभाग ने आने वाले पर्यटकों के लिए दैनिक आधार पर उपयोगकर्ता शुल्क आरंभ करने का निर्णय किया है। निश्चित रूप से हिमाचल सरकार की इस अभिनव पहल का स्वागत ही किया जाना चाहिए। निस्संदेह, इस फैसले के बाद अब बिना किसी प्रवेश शुल्क के इन इलाकों में पहुंचना अतीत की बात हो जाएगी। इतना ही नहीं शूटिंग के लिये, मसलन वृत्तचित्र, फीचर फिल्मों व विज्ञापन आदि के साथ ही टेंट लगाने जैसी गतिविधियों के लिये भी शुल्क संरचना तैयार की गई है। यह एक हकीकत है कि पर्यटकों का अराजक व्यवहार वातावरण में न केवल पर्यावरणीय प्रदूषण फैलाता है बल्कि ठोस कचरा भी छोड़कर जाता है। जिसकी क्षति व सफाई का दबाव राज्य पर पड़ता है। निस्संदेह, सरकार की नई पहल का उद्देश्य आदिवासी जिले लाहौल और स्पीति में पर्यटन के कार्बन फुटप्रिंट को कम करना है। इसके अलावा हिमाचल उच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन में आगंतुकों के लिये सुविधाओं का विस्तार करना भी है। दरअसल, राज्य सरकार सीमावर्ती इलाकों में पर्यटन को बढ़ावा दे रही है और प्रोटोकॉल में संशोधन करके यात्रियों की पहुंच को आसान बना रही है। ऐसी ही एक पहल मंगलवार को किन्नौर जिले के शिपकी-ला में मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू ने शुरू की। दरअसल, इन क्षेत्रों के सामरिक महत्व को देखते हुए राज्य के अधिकारी सेना और भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के साथ समन्वय बनाकर काम कर रहे हैं। निश्चित रूप से हिमाचल प्रदेश सरकार की यह पहल स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिये, खासकर दूरदराज के गांवों के लिये अच्छा संकेत है। जब ग्रामीणों का जन-जीवन बाहर से आने वाले पर्यटकों की गतिविधियों से प्रभावित होता है तो उन्हें पर्यटन से होने वाले लाभ भी मिलने चाहिए। वहीं पर्यटकों की सुरक्षा का भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। पहलगाम आतंकी हमले ने हमें कई सबक दिए हैं। सबक याद दिलाए हैं कि यदि पर्यटकों की सुरक्षा दांव पर हो तो लापरवाही व चूक के लिये कोई जगह नहीं हो सकती।



कणिका में प्रउत

श्री पी आर सरकार

(पूरे विश्व में प्रचलित पूंजीवाद और मार्क्सवाद का एकमात्र वैकल्पिक सामाजिक-आर्थिक-दर्शन प्रउत)

पंचम खंड म

(अध्याय-2)

विप्र युग

क्षत्रिय प्रकृति के पूजक थे । वे प्रकृति को युद्धमान शक्तियों की समष्टि के रूप में मानते थे। इसी समष्टि भावना का नाम था ब्रह्म अर्थात् क्षत्रियों की समष्टि प्रकृति और ब्रह्म में कोई भेद नहीं था। उनके लिए जो कुछ भी प्राकृत उपाधि में परिणित होता वह सब ब्रह्म की अभिव्यक्ति था। विप्रों ने प्राकृत उपाधि से मुक्त और एक सत्ता को अस्पष्ट कल्पना की और उसका नाम रखा आत्मा या परमात्मा अथवा निरूपाधिक ईश्वर । ये सत्ताएं कितना प्राकृति मुक्त हैं इसे लेकर विप्रों में बौद्धिक स्तर के भेद से विभिन्न धारणाएं थीं। फलस्वरूप दार्शनिक दृष्टि से ईश्वर या अल्लाह, गॉड या जेहोवा आदि में तत्त्व गत भेद रह जाता है। रूह या स्पिरिट (ह्यश्चद्बहद्बह्ल) सोल, (ह्यश्रह्वद्य) या श्रात्मा पूर्णरूप से एक सत्ता नहीं है। रूह कब्र से उठ सकती है। स्पिरिट (ह्यश्चद्बहद्बह्ल) चारों ओर चक्कर काटता लोगों को डरा सकता है, सोल (ह्यश्रह्वद्य) भगवान के पास जाकर बैठ सकता है और निरूपाधिक आत्मा देश-काल-पात्र के बन्धनों से परे है। प्राकृत मुक्त और एक सत्ता की यह कल्पना विप्रो की दी हुई है। विप्रगण अपनी बौद्धिक शक्ति द्वारा क्षत्रियों की सहायता से युद्धमान प्रकृति के विरुद्ध संग्राम करते रहे इसीलिये प्राकृत सत्ता के अतिरिक्त इस प्रकार की एक पुरुष सत्ता की कल्पना करने का उन्हें सुयोग मिला ।

क्षत्रियों की धार्मिकता उत्पन्न हुई थी अधिक प्राप्ति एवं अधिक व्याप्ति के मोह से। वे समझते थे कि ईश्वर को मानने से संसार के भोग ऐश्वर्य प्रचुर मिलेंगे । ईश्वर की कृपा से ही वे अपने बाहुबल से वह सब दखल करेंगे ओर बाहुबल से भोग करेंगे। इसीलिये क्षत्रिय समाज युद्ध या डकैती के लिये जाने के पहले अपने कल्पित देवी-देवता कों पूजा करता है या उन देवी-देवता की तृप्ति के लिये, बहुत जगह, पशु-बलि या नर-बलि देता है। विप्र में न तो वह साहस होता है और न वैसा शौर्य-वीर्य ही । इसलिये उनकी आध्यात्मिकता उत्पन्न हुई थी मूलत: अलौकिक शक्ति (श्रष्ष्ह्वद्यह्ल श्रश2द्गह्) पाने के मोह से। विप्र समझते थे कि आध्यात्मिकता उनमें ऐसी शक्ति जगाएगी कि वह लोगों को वर देकर अच्छा कर देगा और लोग भी सन्तुष्ट होकर विप्र को अपने लाभ का एक मोटा भाग दान करेंगे। विप्र समझते थे कि वे आध्यात्मिकता से अभिशाप देने या लोगों को क्षति करने की शक्ति अर्जन कर लेंगे और लोग भय से भक्तिपूर्वक भोग्य वस्तुओं की डाली सजाकर उनके चरणों में समर्पित करेंगे। पौराणिक कथाओं में विप्रो की प्रधानता का वातावरण निर्माण करने की जो व्यापक प्रचेष्टा दीख पड़ती है वह इसी मनोभाव के कारण है। मनुष्य की तो विसात ही क्या है? किसी-किसी पुराण में तो लिखा है कि स्वयं नारायण ने विप्र का पद-चिन्ह अपने हृदय पर धारण किया था ।

विप्रो की प्रतारणा का यही मनोभाव बाद के युग में वैश्यों की अर्थ लोलुप और समाज का शोषक बनाने में बड़ा कारण सिद्ध हुआ। विप्रो को दूसरी वृत्ति थी बिना मेहनत किये हुये खाने की, जिसके कारण वे वैश्यों के परजीवी (श्रड्डह्डह्यद्बह्लद्ग) हो गए। कह सकते हैं कि परवर्ती काल में विप्रों के द्वारा समर्थित धार्मिक मतवाद एवं सामाजिक आदर्श पूरी तरह से वैश्यों के धन के हाथों गिरवी हो गया । विप्रों की सामाजिक व्यवस्था में स्वयं बचे रहना या बचाना बड़ी बात नहीं है, जीने की तरह जीना भी मूल बात नहीं हैं- बड़ी बात है दूसरों को नीच बनाकर, छोटा बनाकर जीना दूसरों के मन में हीनमन्यता निर्माण कर उन्हें गुलाम बनाकर उनका प्राणरस चूस कर जीना -भय दिखाकर या भक्ति वसूल कर अपने को सुप्रतिष्ठित करके जीना । सामाजिक संरचना में विप्रो का मनोभाव यही रहा है-अपना शोषण बनाए रखने के लिये तुम्हारे लिये छल, बल कौशल सब माफ है, ऐसा करने में यदि थोड़ी देर के लिये इज्जत घटे भी तो कोई हर्ज नहीं है।

क्षत्रिय का काम है संग्राम में नई-नई शक्तियों की विचित्रताएँ सीखना और ब्राह्मण का काम है इन विचित्रता की प्रत्येक धारा को वैयष्टिक दृष्टि से देखकर वैयष्टिक विचार अभिव्यक्त करना। किन्तु स्मरण रखना चाहिये कि वैयष्टिकता को प्रधानता अनुशासन को नष्ट कर देती है। मूल नीति अथवा नीतिगत आदर्श के प्रति आस्था अनुशासन के लिये परमावश्यक होती है और व्यष्टि की दृष्टिभंगी को अधिक महत्त्व देने से वह अधिक दृढ़ नहीं रह पाता। यद्यपि विप्र समाज भी यथार्थ में समाज कहने योग्य नहीं है पर वह सामाजिक आदर्श की दृष्टि से क्षत्रिय समाज की तुलना में श्रेष्ठ है फिर भी उसमें व्यक्ति स्वातन्त्र्य की अधिक स्वीकृति रहने के कारण उसका ढाँचा जरा ढीला ढाला है। विप्र समाज में, आंतरिक अनुभूति की अभिव्यक्ति का पूरा-पूरा अवसर नहीं होने पर भी कुछ सीमा तक तो वह अवश्य मिलता है। विप्र शासन के युग में तर्क प्रधान बौद्धिक दर्शनों की बाढ़ दीख पड़ी। जैसे क्षत्रिय समाज में दुर्बल के ऊपर सबल का शोषण चलता है उसी तरह विप्र समाज में अल्पबुद्धि वालों के ऊपर बुद्धिमानों का शोषण व्यापक रूप से चलता रहता है परन्तु विप्र कभी भी इस शोषण को कागज कलम में अच्छा नहीं कहते । पापियों के विरुद्ध कोई दण्ड विधान न करते हुए भी पाप के फलस्वरूप रौरव नरक भोग करना होगा ऐसा कथन विप्रो की स्मृतियों में कहा गया; निपीड़ित मानवता की भूख मिटाने की कोई व्यवस्था विप्र समाज में न रहने पर भी भूखे मनुष्य को अन्न देना पुण्य कर्म है यह व्यवस्था विप्र समाज में दी गई। ऐसे ही व्यावहारिक क्षेत्र में ऊँच-नीच का अनेक प्रकार का भेद मानते हुए भी कागज कलम में विप्र यही मानते रहे कि यथार्थ में मनुष्य-मनुष्य में भाई-भाई का सम्बन्ध है। इस तरह विप्रों का समाज क्षत्रियों के समाज की तुलना में कम दृढ़ होने तथा व्यावहारिक दृष्टि से उल्लेखनीय उदारता का अभाव होने पर भी उसमें कागज कलम में क्षत्रियों के समाज की तुलना में अधिक उदारता रही है। क्षत्रियों को परजवीवी (श्रड्डह्डह्यद्बह्लद्ग) नहीं कहा जा सकता पर विप्रो को परजीवी कहने में कोई भूल नहीं होगी। विप्र अपनी सामाजिक व्यवस्था की त्रुटियों को समझते हैं पर यह सब समझ कर भी वाक् चातुरी से अपने त्रुटिपूर्ण समाज को जिलाए रखने की चेष्टा करते हैं- यही विप्र स्वभाव की विशेषता है।

विप्र समाज में क्षत्रिय समाज की अपेक्षा सद्विचार के लिये बहुत अधिक स्थान है। विप्र नेता दूसरों के सुख दु:ख की अपेक्षा नहीं करते। जो विप्रों के सामने सिर झुकाता है विप्र भी उसकी तरफ से वकालत करता है, उसके लिये देव का आदेश या शास्त्र का समर्थन खोज कर उसे समाज में प्रतिष्ठित करने की चेष्टा करता है। पर यह भी सच है कि उस पर कितना भी बड़ा धार्मिक दायित्व क्यों न हो अथवा किसी के पक्ष में कितनी ही बड़ी युक्ति क्यों न रहे पर विप्र स्वयं हानि उठा कर किसी की वकालत नहीं करता। कहने की आवश्यकता नहीं कि यदि किसी को बड़ा बनाने या पूरी सामाजिक स्वीकृति देने से विप्रो के शोषण का चक्का जाम हो जाए तो विप्र उसका समर्थन तो नहीं ही करेगा बल्कि सारी मानवता को ताक पर रखकर क्षत्रियों की अपेक्षा कहीं अधिक हिंस्र रूप से उस पर आघात करेगा। मध्य युग में धर्मान्ध कैथोलिक कैथोलिकों से भिन्न लोगों को जिन्दा आग में झोंक देते थे क्योंकि वे उनकी दृष्टि में नास्तिक थे.

पूर्व सांसद नगीना राय हत्याकांड में 20 नवंबर को फैसला, 35 साल पुराने मामले में टिकी निगाहें

राजनीतिक दुश्मनी या सुनियोजित हत्या ?

अदालत में दोनों पक्षों की दलीलें पूरी, अब फैसले का इंतजार।



गोपालगंज के पूर्व सांसद और बिहार सरकार में मंत्री रहे नगीना राय की हत्या के करीब 35 साल बाद अब मुकदमे में फैसले की घड़ी करीब आ गई है। जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रथम संजीव कुमार सिंह की अदालत में अभियोजन और बचाव पक्ष की बहस पूरी हो चुकी है। अदालत ने फैसला सुनाने के लिए 20 नवंबर 2026 की तारीख निर्धारित की है।

बचाव पक्ष का दावा है कि राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में आरोपित फंसाए गए। बचाव पक्ष के अधिवक्ता अनिल कुमार दुबे ने अदालत में 211 पन्नों के साक्ष्य और कानूनी फैसले प्रस्तुत करते हुए आरोपितों को निर्दोष बताया। उन्होंने दलील दी कि नगीना राय एक प्रभावशाली राजनीतिक व्यक्तित्व थे और उनकी कई लोगों से दुश्मनी थी। पटना में उन पर पहले भी बम से हमला हुआ था, जिसमें वे बच गए थे।

बचाव पक्ष के अनुसार, पूर्व विधायक बच्चा चौबे और उनके परिजनों को राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के कारण इस मामले में फंसाया गया। अधिवक्ता ने घटना के समय को लेकर कथित विसंगतियों, गवाहों के बयानों में अंतर और गोली चलाने वाले हथियार की पहचान को लेकर सवाल उठाए। बचाव पक्ष ने यह भी दावा किया कि घटना के समय एक आरोपित पटना में और दूसरा अपने ससुराल में था। इन दलीलों के आधार पर उसने आरोपितों को बरी करने की मांग की।

अभियोजन ने अपना पक्ष रखते हुए गवाह और बरामदगी को अहम बताया। अभियोजन पक्ष की ओर से एपीपी धर्मदेव सिंह और अधिवक्ता वेद प्रकाश तिवारी ने दलील दी कि नगीना राय की हत्या राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के कारण की गई थी।

अभियोजन ने आरोपितों के बयानों में कथित विरोधाभासों की ओर अदालत का ध्यान दिलाया। साथ ही, हथियार से गोली चलने, आरोपितों के घर से हथियार बरामद होने और चश्मदीद गवाह की गवाही का हवाला दिया।

दोनों पक्षों ने अपने-अपने तर्क और साक्ष्य अदालत के सामने रखे हैं। अब इनकी विश्वसनीयता और कानूनी महत्त्व का आकलन अदालत करेगी। कुचायकोट थाना कांड संख्या 40/1991 के अनुसार, गोपालपुर गांव निवासी नगीना राय 10 अप्रैल 1991 की शाम करीब छह बजे पटना से गोपालगंज पहुंचे थे। को-ऑपरेटिव बैंक में कुछ लोगों से मिलने के बाद वे जीप से घर जा रहे थे।

इसी दौरान कुचायकोट थाना क्षेत्र के भोपतपुर गांव में गन्ना लदी बैलगाड़ी के कारण सड़क पर जाम लग गया और उनकी जीप रुक गई। आरोप है कि तभी सात-आठ लोगों ने उन पर गोली चला दी। दो गोलियां लगने से वे गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें सदर अस्पताल ले जाया जा रहा था, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई।

अब 20 नवंबर पर सबकी निगाहें टिकी है। तीन दशक से अधिक समय से चर्चा में रहे इस हत्याकांड में अब अदालत का फैसला आने वाला है। बचाव पक्ष ने आरोपितों को झूठे मुकदमे में फंसाए जाने की दलील दी है, जबकि अभियोजन ने गवाही और बरामदगी को अपने पक्ष का आधार बनाया है।

क्या अदालत अभियोजन के साक्ष्यों को दोषसिद्धि के लिए पर्याप्त मानेगी, या बचाव पक्ष की दलीलों को स्वीकार करेगी ? इसका जवाब 20 नवंबर को आने वाले फैसले से मिलेगा। तब तक आरोपितों के संबंध में किसी निष्कर्ष पर पहुंचना उचित नहीं होगा।



प्रोफ़ेसर (डॉ.) चंद्रेश्वर की भोजपुरी कथेतर गद्यकृति हमार गांव बिहार के विश्वविद्यालयों में भोजपुरी के एम.ए. पाठ्यक्रम में शामिल



तराई क्षेत्र के आक्सफोर्ड कहे जाने वाले महारानी लाल कुंवरि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश के निवर्तमान विभागाध्यक्ष और प्रोफ़ेसर (डॉ.) चंद्रेश्वर पाण्डेय के द्वारा भोजपुरी साहित्य में लिखित कथेतर (ह्श्ठ स्नद्बष्ह्लद्बश्ठ) गद्यकृति हमार गांव को बिहार के सभी विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर पर भोजपुरी पाठ्यक्रम में नए सत्र 2026-27 से शामिल किया गया है। प्रोफ़ेसर (डॉ.) चंद्रेश्वर ने इस संदर्भ में पूछे जाने पर बताया कि मेरी भोजपुरी कथेतर गद्यकृति हमार गाँव को बिहार के सभी विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर (रू. भोजपुरी ह्स्का.ह्-ष्ट्ष्ट302) पाठ्यक्रम में नए सत्र 2026-27 से शामिल किए जाने का समाचार मेरे लिए अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है। यह केवल मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि भोजपुरी कथेतर गद्य विधा और हमारे गाँवघर की संस्कृति की स्वीकृति है।

मैं बिहार के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, भोजपुरी विभाग के विद्वानों और पाठ्यक्रम समिति के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने एक सामान्य किसान परिवार के बेटे की इस कृति को अकादमिक मान्यता दी। बिहार के बक्सर ज़िले के सिमरी अंचल एक गांव आशा पड़री की धूल से लेकर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ तक की मेरी साहित्यिक यात्रा आज सार्थक हुई।

आशा है हमार गाँव के सात संस्मरण नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ेंगे।

डॉ. चंद्रेश्वर ने इस भोजपुरी कथेतर गद्यकृति हमार गाँव के लेखन के बारे में पूछे जाने पर बताया कि इसकी रचना उन्होंने बलरामपुर में रहते हुए सन् 2018-19 के दौरान की थी। इसका प्रकाशन रश्मि प्रकाशन, लखनऊ से सन् 2020 में हुआ था। पिछले 6 वर्षों में इस भोजपुरी कथेतर गद्यकृति को भोजपुरी साहित्य समाज और जन मानस के बीच बहुत लोकप्रियता प्राप्त हुई है। इस कृति को सन् 2024 की फरवरी में विश्व पुस्तक मेले, नयी दिल्ली में उत्कृष्ट भोजपुरी कथेतर गद्य लेखन के लिए सर्व भाषा सम्मान भी हिन्दी साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र के हाथों प्राप्त हुआ है। इसका दूसरा संस्करण भी सन् 2025 में आ चुका है। डॉ. चंद्रेश्वर ने बताया कि उनकी इस भोजपुरी कथेतर गद्यकृति का अनुवाद अवधी भाषा में हो चुका है। आगामी वर्षों में यह कृति अँग्रेजी और हिन्दी में भी अनूदित होकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होगी। डॉ. चंद्रेश्वर को इस अकादमिक उपलब्धि के लिए सोशल मीडिया के ज़रिए पूरे देश से बधाइयां मिल रही हैं। स्थानीय स्तर पर मी बलरामपुर के महारानी लाल कुंवरि स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफ़ेसर (डॉ)जनार्दन प्रसाद पांडेय, भौतिक विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर डॉ. अरविन्द कुमार द्विवेदी, प्रोफ़ेसर डॉ प्रेम कुमार सिंह,बी.एड के विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर डॉ.राघवेन्द्र सिंह, वाणिज्य विभाग के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉ. के.पी. मिश्र, कंप्यूटर साइंस के असिस्टेंट प्रोफ़ेसर डॉ. अविनाश सिंह आदि ने भी हमार गांव के प्रख्यात लेखक प्रोफ़ेसर डॉ.चंद्रेश्वर को बधाइयां दी है।



रघुबीर नारायण -जयंती प विशेष- सुंदर सुभूमि भइया - बटोहिया गीत के रचवइया

बटोहिया गीत सुंदर सुभूमि भइया के रचयिता बाबू रघुबीर नारायण जी के जयंती प आखर परिवार अपना भोजपुरिया नायक के बेर बेर नमन क रहल बा।

छपरा जिला के दहियांवा गांव में बाबू रघुबीर नारायण जी के जनम भइल रहे । अंग्रेजी के विद्वान आ प्रोफेसर रहनी । बाकिर भोजपुरी में इहाँ के लिखल बटोहिया गीत , ना खाली भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत बनल बलुक , क गो देसन में इ गीत क्रांति आ भारतीयता के ध्वजावाहक बनल ।

सन 1944 से 1970 तकले बटोहिया गीत , बिहार टेक्स्ट समिती के ओर से कक्षा 10 कक्षा 11 के प्रकाशित हिंदी काव्य संग्रह में आवरण पृष्ठ प बटोहिया के छपाई होत रहे । बटोहिया के गूंज मारीशस, त्रिनिदाद, फिजी, गुयाना, सरीनाम आ अफ्रीका के ओह देसन में रहे जहाँ जहाँ भोजपुरिया लोग रहत रहे ।

बटोहिया गीत , अइसे त लिखाइल 1911 में रहे बाकिर प्रकाशन एह गीत के 1917 में भइल रहे । बाबू रघुबीर नारायण जी , 1912 से ही एह गीत के अलग अलग मंच से सुनावत रहनी ।

बाबू रघुबीर नारायण जी बटोहिया गीत के लेखक के सबसे पहिला रचना ए टेल आफ बिहार रहे जवन 1905 में प्रकाशित भइल रहे, जबकि बटोहिया 1911 में आइल रहे आ 1912 में पहिला हाली बटोहिया के प्रदर्शन बिहारी स्टूडेंट कांफ्रेंस चम्पारण (मोतिहारी) में भइल रहे । एह रचना के सुनवले रहनी, बिहार के पहिला मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह जी के छोट भाई गोपालकृष्ण बाबू ।

ए टेल आफ बिहार पटना कॉलेज के प्रिंसपल जेम्स के समर्पित लोकगाथा (बैलेड्स) ह । इ किताब एगो लमहर पद्यमय लोकगाथा ह । एह किताब में दू गो राजा के लड़ाई के कथ्य बा । एगो राजा दोसरा राजा के बेटी से प्रेम करत बाड़े आ बिआह कइल चाहत बाड़े बाकिर उ राजा तइयार नइखन बिआह करे खातिर , त प्रेमी राजा , युद्ध करत बा ?डे आ युद्ध जीत के बिआह करत बाड़े । इ युद्ध गंगा-गंडक आ शोणभद्र के संगम सोनपुर में होता ।

ध्यान देब सभे 1905 में बाबू रघुबीर नारायण जी के पहिला किताब ए टेल ऑफ बिहार आवत बा आ रघुबीर बाबू के जनम 30 अक्टूबर 1884 में भइल रहे । यानि कि 19-20 साल के उमिर में बाबू रघुबीर नारायण जी अंग्रेजी भाषा लोकगाथा लिखले रहनी । 1929 में दू गो अउरी किताब आ गइल रहे जवन अंग्रेजी में रहे । सीता हरण (1927) , वे साइड ब्लॉसम (1929) आइल दुनो अलग अलग विषय प केंद्रित किताब रहली स । सीता हरण एगो स्त्री के पावे के कहानी प आधारित काव्य ह जबकि वे साइड ब्लॉस्म , प्राकृतिक मानवीय सौंदर्य प आधारित कविता के संकलन ह ।

एह जानकारी के पढत घरी इ ध्यान रहे कि 1905-06 में बाबू रघुबीर नारायण जी हृदय रोग से ग्रसित हो गइल रहनी । यानि कि 22-23 साल के उमिर में । बटोहिया के रचना एह दुखद समय काल के बादे भइल ।

1905 से ही एनि बेसेंट के संपादक वाली काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्रकासित अंग्रेजी पत्रिका में फोल्क टेल्स ऑफ बिहार के नाव से इहां के लेख प्रकाशित होत रहे । ए टेल आफ बिहार से बटोहिया , फोल्क टेल्स ओफ बिहार , सीता हरण , वे साइड ब्लास्म के बाद बाबू रघुबीर नारायण के नाव ना खाली भारत भा भारतीत लोगन वाला द्वीप (मॉरिसस , फिजी , त्रिनिदाद , सुरीनाम आदि जगहन प) बलुक इंग्लैंड तकले गइल रहे ।

1945 में बाबू रघुबीर नारायण जी खण्ड-काव्य आइल द बैटेल ओफ केरेन जवन अबिसिनिया के लड़ाई जवन केरेन नाव के गांव में भइल रहे ओहि प आधारित रहे । एह खण्ड काव्य के बुनियाद अंग्रेज के ओर से लड़त भारतीय सैनिक आ इटली के सेना के बीच में भइल युद्ध प रहे ।

एहि में लिखले बानी -

He died a deathless son of fame
And raised his dear old Indias name
O Sainted Arjun, Indias pride
O shades of Heroes of Mewar
Bless him-for Kashtriya-like he died
That Bold, Intrepid son of War.

एह खण्डकाव्य में केहू एक नायक नइखे बलुक नायक भारत बा , भारत राष्ट्र बा ।

अंग्रेजी, हिन्दी , उर्दू , फारसी, संस्कृत आ भोजपुरी भाषा प बाबू रघुबीर नारायण जी पुरा अधिकार रहे आ बहुत खुल के एह भाषा सभ के उहां के अपना साहित्य आ दैनिक जिनगी में प्रयोग कइले बानी ।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार , बटोहिया गीत के पढ के लिखले रहनी कि **I cannot think of you without remembering your Batohiya.**

बाबू रघुबीर नारायण जी के दू गो खण्ड काव्य चम्पा , आ दी रोज आफ दि वाइल्ड्स नाव के किताब बा ?ड़ी स ।

इंग्लैंड के राजकवि अलबर्ट आस्टिन के प्रशंसा वाला चिठ्ठी में लिखल रहे कि अंग्रेजी साहित्य के राउर ज्ञान पुर्ण बा । हम अपना देस के साहित्यकारन से अनेको कविता प्राप्त करीला, बाकिर उ सभ भाव-उरेहाई में रउरा कविता के बराबरी ना कर सके।

बाबू रघुबीर नारायण जी के जिनगी बड़ा कष्ट में बीतल रहे । डॉ तैयब हुसैन जी के लेख से जवन जानकारी मिल रहल बा ओह के पढत , रघुबीर नारायण जी के साहित्य संसार के देखत , जवन बुझाता , जतना आदमी सोच सकेला ओह सोच ओह कल्पना के दायरा से बहुत बढ के रहनी रघुबीर नारायण जी ।

[बाबू रघुबीर नारायण जी के अउरी क गो प्रकाशित किताब भा रचना में से कुछ किताबिन के जिक्र एजुगा हो रहल बा । असल में इ पुरा जानकारी , डॉ तैयब हुसैन पिड़ीत जी के दु तीन गो लेख से मिलल जानकारी के आधार प लिखल गइल बा । हमनी के बाबू रघुबीर नारायण जी के मात्र बटोहिया गीत खातिर जानेनी जा बाकिर बाबू रघुबीर नारायण जी के साहित्यिक योगदान बहुत बड़ आ वैश्विक स्तर प रहल बा जवना से हमनी के आजो अनजान बानी जा ।

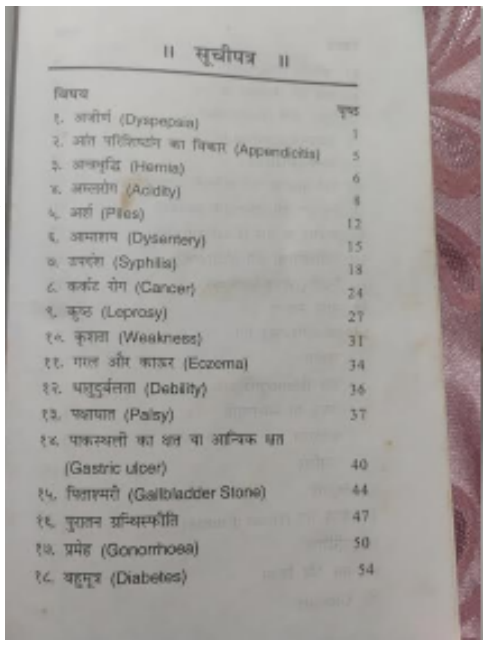
बहुत जगह 31 अक्टूबर के भी जयंती के रुप में मनावल जाला बाकिर भोजपुरी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. ब्रजभूषण मिश्र जी आ डॉ तैयब हुसैन पिड़ीत जी के ओर से तथ्यात्मक जानकारी के हिसाब से बाबू रघुबीर नारायण जी के जयंती 30 अक्टूबर के ह ।

यौगिक चिकित्सा और द्रव्यगुण

श्री प्रभात रंजन सरकार
ग्रंथकार का निवेदन

चिकित्सा का उद्देश्य है शारीरिक और मानसिक स्वस्थता का विधान। इसलिये इसमें चिकित्सा शास्त्र विशेष की मर्यादा रक्षा का प्रश्न बड़ा नहीं है, बड़ा है रोगी के कल्याण का प्रश्न।

बाह्य या आभ्यन्तरीण औषधि प्रयोग के द्वारा विकारप्राप्त यन्त्र को जिस प्रकार स्वाभाविक अवस्था में लाया जाता है, ठीक उसी प्रकार यौगिक आसन-मुद्रादि की सहायता से अधिकतर निरापद और निर्विघ्न रूप से देह यन्त्र की स्वाभाविक कर्मदायता को फिर से ले आना संभव है। प्रत्येक व्याधि की यौगिक चिकित्सा के सम्बन्ध में जनसाधारण को अवहित (जानकारी) कराना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है।


॥ सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ
१. अजीर्ण (Dyspepsia)	1
२. अंत्र परिशिष्ठांश का विकार (Appendicitis)	5
३. अण्डवृद्धि (Hernia)	6
४. अम्लरोग (Acidity)	8
५. अर्श (Piles)	12
६. अमाशय (Dysentery)	15
७. उपदंश (Syphilis)	18
८. कर्कट रोग (Cancer)	24
९. कुष्ठ (Leprosy)	27
१०. कृशता (Weakness)	31
११. गल और काछर (Eczema)	34
१२. धातुदुर्बलता (Debility)	36
१३. पक्षाघात (Palsy)	37
१४. पाकस्थली का क्षत या आन्त्रिक क्षत (Gastric ulcer)	40
१५. पित्ताश्मरी (Gallbladder Stone)	44
१६. पुरातन ग्रन्थिस्फीति	47
१७. प्रमेह (Gonorrhoea)	50
१८. बहुमूत्र (Diabetes)	54

पुस्तक में वर्णित आसन-मुद्रादि का अनुशीलन कर संसार में लोग रोगमुक्त हों, यही मेरा उद्देश्य है। तब जनसाधारण से मेरा अनुरोध है कि वे आसन-मुद्रादि का व्यवहार अपने मन से नहीं कर अभिज्ञ आचार्यों के परामर्शनुसार करें। आनन्दमार्ग के आचार्य बिना पारिश्रमिक के सभी को सहायता देने के लिए प्रस्तुत रहेंगे। आसन, मुद्रा, स्नान,

आदि का विवरण आनन्द मार्ग चर्याचर्य पुस्तक के प्रथम, द्वितीय और तृतीय खंड में विस्तृत रूप से दिया हुआ है। पाठक प्रयोजन के अनुसार तीनों पुस्तकें देख सकते हैं।

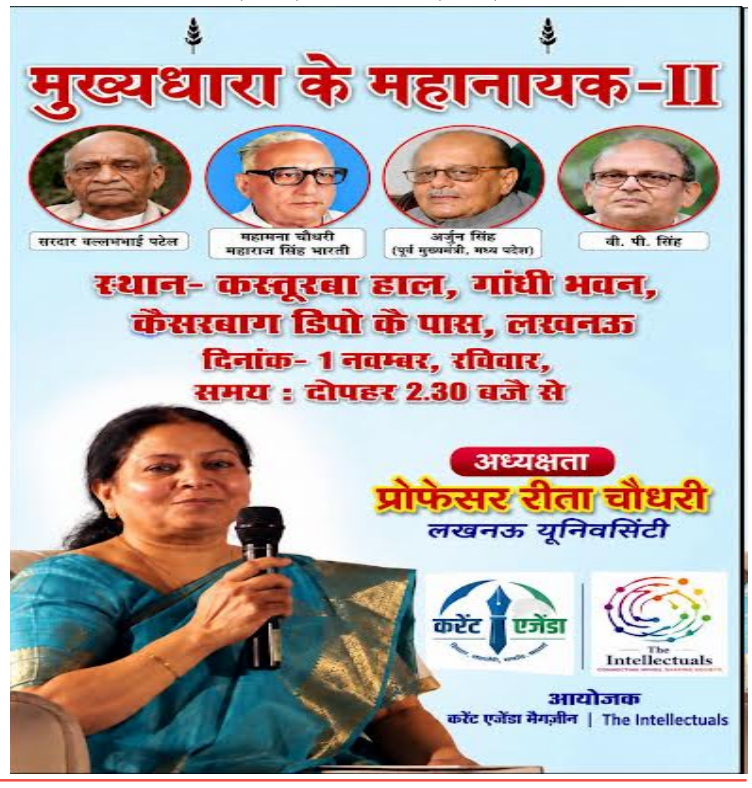
आसन-मुद्रा के साथ-साथ बिना व्यय या अपव्यय में सहज-लभ्य फलप्रद रूप में कुछ परीक्षित औषधियों की तालिका और उसकी व्यवहार विधि पुस्तक में दे दी गई है। जनसाधारण उन्हें काम में ले सकते हैं और आवश्यकतानुरूप उनके सम्बन्ध में अभिज्ञ आचार्यों से परामर्श ले सकते हैं।

समय अत्यन्त कम है, इसलिए व्यक्तिगत रूप से किसी के साथ पत्राचार करना मेरे लिए संभव नहीं है। आसन, मुद्रा औषधि या इनकी प्रयोग विधि के सम्बन्ध में किसी को कोई प्रश्न हो तो वे अपने-अपने आचार्य या आनन्द मार्ग के स्थानीय ग्राम या जिला कमेटी या केन्द्रीय कमेटी के साथ सम्पर्क स्थापित करें। अलमति विस्तारेण-

- ग्रन्थकार
राँची, बिहार
आनन्द पूर्णिमा, 1969

इस पुस्तक में 30 से अधिक रोगों के बारे में चर्चा की गई है। संबंधित रोगो, उसके कारण, आवश्यक निवारण के लिए योगासन एवं मुद्रा आदि की चर्चा की गई है । कुछ स्थानीय जड़ी बूटियों से संबंधित दवाएं भी सुझाए गए हैं ।

अब हम उनमें से एक-एक की चर्चा एक-एक अंक में करेंगे।



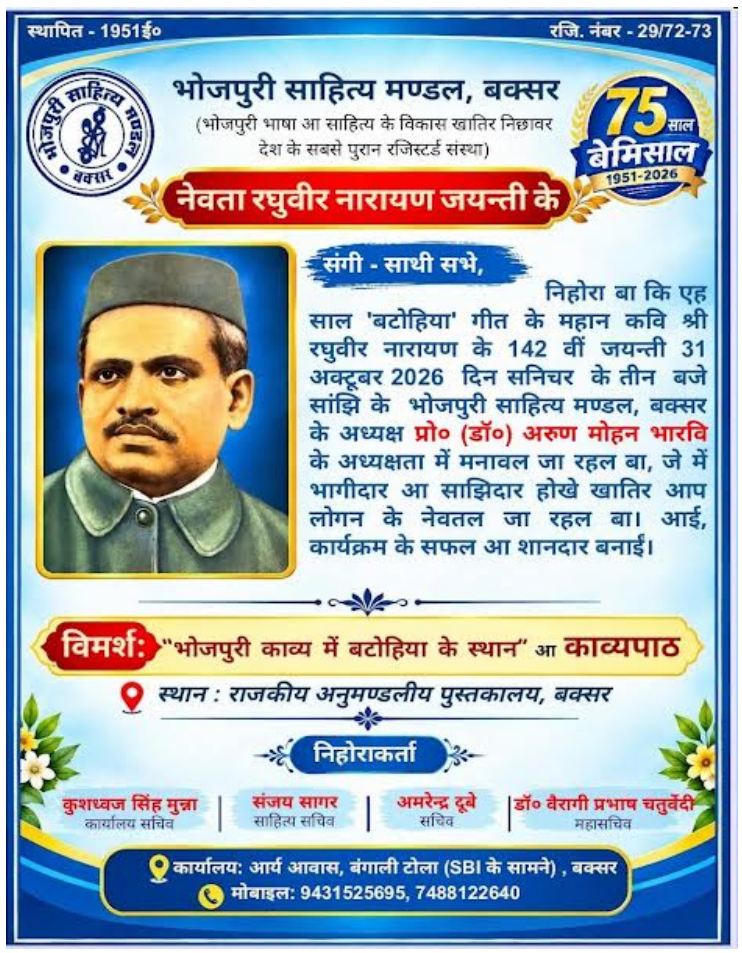
ज्योतिष

डॉ –कीर्ति वर्द्धन

आइये आइये
आपके भाग्य में क्या लिखा
भूत भविष्य वर्तमान की
पहचान कराइये।
हाथ की लकीरें
कुण्डली में बैठे ग्रह
आपका भाग्य
शादी विवाह
सन्तान का योग
होने वाले बच्चों का भविष्य
धनी होने के उपाय
कैसे मिलेगा
मान और सम्मान
हमारे पास है
सब समस्याओं का समाधान।
प्रेमिका रूठी हो
बेवफा
या
झूठी हो,
जीजा साली का खुमार
हमारे पास
हमारे पास है सबका उपचार।
आइये
मात्र ग्यारह सौ रुपये में
भूत भविष्य वर्तमान की
जाँच कराइये।

भीड़ से आवाज आई
सुनो ज्योतिषी भाई
मेरी समस्या पर दो ध्यान
मुझे बताओ कोई समाधान।
मेरी कुंडली में कौन सा ग्रह है
जो परिवार में
भाई चारे की राह रोके खड़ा है?
घर के बीच खड़ी दिवार
कब तक गिर जाएगी
माँ बाप की ममता
परिवार को मिल पाएगी?
कब मेरा बेटा
सर्वश्रेष्ठ बन पायेगा
अपने कार्य क्षेत्र में
शीर्ष पर छा जाएगा?
क्या तुम्हारा ज्योतिष
मेरे समस्याओं
सवालों का हल खोज पाएगा?
सवाल तो और भी बहुत हैं
देश में जाति धर्म
अलगाववाद
समस्याएं बहुत हैं।
जिनका प्रभाव
मेरे परिवार पर भी होता है
क्या उसे पढ़ने की भी
मेरे हाथ
या माथे में कोई रेखा है?

ज्योतिषी बोला
अपने मुख से
मधुर चाशनी भरे
शब्दों का पिटारा खोला।
श्री मान
न हों हैरान परेशान
यूँ तो ज्योतिष में
आपकी हर समस्या की है पहचान
और हमारे पास
होता है सबका समाधान?
आपके कारण ही तो
हमारी रोज़ी रोटी चलती है
आपकी समस्याओं पर ही
हमारी गृहस्थी पलती है।
परन्तु श्री मान
इस बात पर भी दें ध्यान
कि क्यों
ईश्वर नें
दिन और रात बनाये
क्यों पाप और पुण्य
जगत में बताये?
फूल की खुशबू
सौन्दर्य का बखान है,
क्यों नहीं उपवन में
काँटों की उपस्थिति का भान है?
आपकी चाह
जगत में सर्वश्रेष्ठ बनने की
स्वयं ईश्वर को भी
चुनौती देने की
परन्तु
यह तो तुलनात्मक अभियान है
आपकी चाह में
झलकता अभिमान है।
महोदय
आपकी समस्या
बहुत छोटी है
बस आपके अन्तश: में
अहंकार की रेखा
बहुत मोटी है।
आदर्श के नाम पर
ढोल पीटना चाहते हो,
आँगन में खड़ी दिवार
भाई से गिरवाना चाहते हो?
क्या कोई सर्वश्रेष्ठ की परिभाषा है
कौन है
जिसकी नहीं अभिलाषा है?
खोखले आदर्श
ज़मीनी हकीकत नहीं जानते
मृग मरीचिका से सुन्दर
सत्य नहीं पहचानते?
परन्तु जनाब
हमारे पास इसका भी है उपाय
कुछ विशेष मंत्र
और पूजा
नियमित नियमपूर्वक करनी पड़ेंगी
उसका खर्च अलग से लगेगा
यकीन मानिए
आपका भाग्य
आपके अनुरूप ही चलेगा।
आपकी पत्नी
आज्ञाकारी बन जाएगी
घर की कलह खत्म होते ही
बाहर शान्ति नज़र आयेगी।
आपके बच्चे बहुत आगे बढ़ेंगे
धन तो खूब कमाएंगे
परन्तु आपको
ठेंगे पर धरेंगे।
आपके माथे की लकीरें बता रही हैं
मन में उठते
अंतर्द्वंद्व को दर्शा रही हैं।
आपकी चाह
भाई को नीचा दिखाने की है
सबसे बड़ी आपकी
यही परेशानी है।
कुंडली के नवम भाव में
शनि की दृष्टि है
परन्तु सूर्य की इस पर
कृपा बरसती है।
सूर्य मज़बूत है
वृहस्पति संग हैं
आपकी कुंडली में
बहुत पैंच और ख़म हैं।
आपके हाथ में भाग्य रेखा प्रबल है
बच्चे की शादी का योग बन रहा है
उसका भविष्य
उज्ज्वल लग रहा है।
जनाब
यूँ तो हम बहुत कुछ बता सकते हैं
आपके सोये भाग्य को
जगाने की राह सुझा सकते हैं।
परन्तु
सुन्दर भविष्य के लिए
सुखद वर्तमान न गँवाइए
आज खुश रहो
भविष्य सुखद बनाइये।



अल्हड़-सी बच्ची

नेहा चौरसिया
तिनसुकिया,असम



मां जब तुम बच्ची थी
कली-सी जब तुम कच्ची थी,
जब थी तुम अपने घर की लाडली
क्या तुम भी घर सिर पर उठा लेती थी?
या तब भी था तुम्हें जिम्मेदारियां ने घेरा
क्या कि तुमने भी कभी ज़िद्द?
या निभाया घर की बड़ी बेटी का फर्ज।

जब थी तुम में अल्हड़पन,
जब करती थी नादानियां,
वह पल क्या तुम्हें याद है!
तुमने भी तो कभी आलस की होगी,
अब क्यों इतना फुर्तीला मिजाज है।

अपनी पसंदीदा वस्तु के लिए तुमने भी किए होंगे नोक-झोक,
अब क्यों शांति और सहनशीलता का ताज है?
कब आखिरी बार बनायें थे तुमने अपने पसंदीदा पकवान!
खुद के हिस्से का भी बच्चों को ही दे देती हो,
उनकी पसंद ही अब तुम्हारी पसंद बन गई है,
एक अल्हड़-सी बच्ची अब मां बन गई है।

क्या मां बनने से निजी जीवन बदल जाता है ?
स्वभाव भी परिवर्तित हो जाता है
क्या मां बनना है इतना कठिन ?
मैं चाहती हूं मां, तुम खुद के लिए भी जीना सीखो,
अपनी भी परवाह करो और अपने मन का करना सीखो।।

हम ना करब करवा चउथ ए सखी

हम ना करब करवा चउथ ए सखी
रोज गरियावेला सजना पीके शराब ए सखी
हम ना करब करवा चउथ ए सखी।

जब से धईनी हम एकर बहियाँ
दुखवे में बीतल जिनिगिया ए सखी
हम ना करब करवा चउथ ए सखी ।

ना दिहलस पेटभर कबहुँ ई अनवा
ना दिहलस कबहुँ तन प बसतरवा
जीवनभर दिहलस ई हमरा के दुख ए सखी
हमना करब कररवा चउथ ए सखी।

जब कवनों मांगिला एकरा से चीजवा
फट से कहेला मांगले
अपना बाप से ए सखी
हम ना करब करवा चउथ ए सखी।

कहँवा ले कहीं सखी आपन दुखवा
कबहुँ कबहुँ राख देवेला ई उपासवा
बोलला प लाते लाते मारेला ए सखी
हम ना करब करवा चउथ ए सखी।

इहे पति मिलिहें सखी
जदि हमके अगला जनम में
रोज मरिहें पीके शराब
असहीं लाते लाते ए सखी
हम ना करब करवा चउथ ए सखी
हम ना करब करवा चउथ ए सखी।

धर्मदेव सिंह
प. बंगाल

'धनबाद में दीपावली पर बढ़ी चाक की रफ्तारए पर कुम्हारों के पुश्तैनी कारोबार पर पड़ी बाजारवाद की मार'



'धनबाद ' बाजारवाद के दौर में कला.संस्कृति से जुड़े पारंपरिक हुनर की अनदेखी का सबसे अधिक असर पुश्तैनी धंधों पर पड़ा हैण् मिट्टी के दीये और दूसरी पारंपरिक वस्तुएं बनाने वाले कुम्हार भी इससे अछूते नहीं हैं

हर साल दीपावली नजदीक आते ही धनबाद के ग्रामीण इलाकों और कस्बों में चाक की रफ्तार बढ़ जाती हैण् कुम्हार परिवारों के चेहरे पर उम्मीद लौट आती हैए लेकिन त्योहार बीतते ही यह रौनक धीरे.धीरे गायब हो जाती हैण् विषम परिस्थितियों के बावजूद जिन परिवारों ने मिट्टी की कला का दामन थामे रखा हैए उनका संघर्ष महज मजबूरी नहींए बल्कि अपनी परंपरा और हुनर के प्रति लगाव का भी प्रतीक हैण् कलाकार के इसी संघर्ष को ज्ञानप्रकाश विवेक की पंक्तियां बयां करती हैंए ष्एक भूखे की कला का रूप तो देखोए पत्थरों से उसने इक रोटी तराशी है

'त्योहार की रौनक में छिपा है साल भर की जद्दोजहद का दर्द'

धनबाद के मनईटांड़ की कुम्हारपट्टी या बलियापुर के सांवलापुर पहुंचने पर दीपावली की तैयारियों की रौनक साफ दिखाई देती हैण् कहीं चाक पर मिट्टी के दीये आकार ले रहे हैंए तो कहीं तैयार दीयेए खिलौने और भगवान गणेश.लक्ष्मी की मूर्तियां सुखाकर बिक्री के लिए रखी जा रही हैंण् परिवार के बड़े.बुजुर्गों से लेकर युवा और महिलाएं तक इस काम में जुटे हैंण

किसी के जिम्मे मिट्टी तैयार करने का काम हैए तो कोई चाक पर दीये बना रहा हैण् कुछ लोग तैयार वस्तुओं को धूप में सुखाते हैंए जबकि अन्य उन्हें रंगने और सजाने में हाथ बंटाते हैंण् त्योहार के दौरान परिवार के सभी सदस्यों का सामूहिक श्रम घरों को कामकाज और उम्मीदों से भर देता हैण् लेकिन इस रौनक के पीछे साल भर की आर्थिक जद्दोजहद भी छिपी हैण् दीपावली के कुछ दिनों पहले तक जिस पुश्तैनी हुनर की बाजार को जरूरत महसूस होती हैए त्योहार बीतने के बाद उसकी मांग काफी कम हो जाती हैण् ऐसे में कुम्हारों के सामने नियमित काम और आमदनी बनाये रखने की चुनौती खड़ी हो जाती हैण

'पर्व.त्योहार पर ही याद आता है पुश्तैनी हुनर'

मिट्टी के दीये और पारंपरिक वस्तुएं बनाने वाले कारीगरों के लिए दीपावली केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन नहींए बल्कि अतिरिक्त कमाई का एक महत्वपूर्ण अवसर भी हैण् इसी सीमित अवधि में उन्हें अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के साथ मिट्टीए रंग और अन्य सामग्री पर किये गये खर्च की भरपाई करनी होती हैण् त्योहार के बाद मांग घटने से उनकी आजीविका प्रभावित होती हैण् साल के बाकी दिनों में नियमित ऑर्डर और बिक्री की कमी उनके सामने आर्थिक अनिश्चितता पैदा करती हैण् यही वजह है कि कई परिवारों के लिए पुश्तैनी कला को जारी रखना आसान नहीं रह गया हैण

हिंदी साहित्य की साधना लाई रंगए धनबाद की ममता बनर्जी को मिलेगा रवीन्द्रनाथ टैगोर सम्मान

'बाजार की चमक के बीच अपनी जगह तलाशते मिट्टी के दीये'

बाजार में बिजली की झालरोंए रंग.बिरंगी लाइटों और दूसरे सजावटी उत्पादों की भरमार हैण् आधुनिक सजावट के इन विकल्पों के बीच मिट्टी के दीयों को अपनी जगह बनाये रखने के लिए संघर्ष करना पड़ता हैण

हालांकिए मिट्टी का दीया महज रोशनी देने वाली वस्तु नहीं हैण् यह भारतीय त्योहारों की सांस्कृतिक परंपरा और पीढ़ियों से चले आ रहे हुनर का प्रतीक भी हैण् इसे बनाने में स्थानीय मिट्टी की पहचानए उसके गुणों की समझ और हाथों के लंबे अभ्यास की भूमिका होती हैण् पारंपरिक दीयों की खरीद यदि केवल त्योहार की रस्म तक सीमित रह जायेगीए तो इस कला से जुड़े परिवारों के लिए इसे आजीविका का स्थायी आधार बनाये रखना मुश्किल होगाए

'बदलती पसंद और बाजार की चुनौतियों से प्रभावित बिक्री'

आज बाजार में किसी वस्तु की मांग केवल उसकी उपयोगिता से तय नहीं होतीण् कीमतए उपलब्धताए आकर्षक पैकेजिंग और उपभोक्ताओं की बदलती पसंद भी बिक्री को प्रभावित करती हैण् सीमित संसाधनों के साथ काम करने वाले कुम्हारों के सामने अपने उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने और उचित कीमत हासिल करने की चुनौती रहती हैण

दीये बनाने में लगने वाली मेहनत और समय के अनुरूप कीमत मिलना जरूरी हैण् यदि कारीगरों को उनके उत्पादों का उचित मूल्य नहीं मिलताए तो पुश्तैनी काम से होने वाली आमदनी पर असर पड़ता हैण् ऐसे में पारंपरिक कला को बचाने के लिए सिर्फ त्योहार के दौरान खरीदारी बढ़ाना ही पर्याप्त नहींए बल्कि कारीगरों को नियमित बाजार उपलब्ध कराना भी जरूरी हैण

'इलेक्ट्रिक चाक से आसान हुआ कामए लेकिन हुनर की अहमियत बरकरार'

समय के साथ कुम्हारों के पारंपरिक काम में भी तकनीक का इस्तेमाल बढ़ा हैण् इलेक्ट्रिक चाक से मिट्टी को आकार देना आसान हुआ है और शारीरिक मेहनत कम करने में मदद मिली हैण् इससे कम समय में अधिक दीये बनाने की संभावना भी बढ़ती हैण् हालांकिए मशीन अपने आप मिट्टी को सुंदर और उपयोगी वस्तु में नहीं बदल सकतीण् मिट्टी की मात्राए उसकी नमीए चाक की गति और हाथों के दबाव के बीच तालमेल साधने के लिए अनुभव जरूरी हैण् दीये का आकारए मोटाई और किनारों की बनावट कारीगर के कौशल पर निर्भर करती है–



१२६.आदमी पत्थर है

मैंने पत्थर से पूछा -
लोग तुम्हें पत्थर कहते हैं
तुम्हें उनकी बातों से व्यथा नहीं होती
पत्थर ने कहा-
भाई को भाई सताता है
देखता है डाह भरी दृष्टि से
पड़ोसी के विकास से पड़ोसी जलता है
चोट पहुँचाते संकोच नहीं करता
कोई-कोई रिश्तेदार अपने रिश्तेदार को
धोखा देते महसूस नहीं करता दर्द
छोड़ देता है अपनापन की बात
जिससे असहज होती जाती है ज़िन्दगी
हम तो वैसा नहीं करते
हम बिगड़े कहाँ हैं जो कि नहीं सुधरते
हमसे पत्थर दिल तो आदमी है
गले लगाता है काट देता है गला
अपने आप को कहता है इन्सान
लेकिन वह इन्सान होता कहाँ है
मैं तब इत्मीनान हो गया कि
पत्थर बिल्कुल सच कह रहा है
अनुभव की बात,
आदमी पत्थर है
पत्थर काटकर राह निकल जाती है
आदमी राह ही नहीं निकलने देता।



विद्या शंकर विद्यार्थी
रामगढ़, झारखण्ड

भीड़ के बीच बिखरा भरोसा – आंदोलन से अविश्वास तक – डॉ. शैलेश शुक्ला

सृजन संसार अंतरराष्ट्रीय पत्रिका समूह

डॉ. शैलेश शुक्ला
वैश्विक समूह संपादक

भारत ने स्वतंत्रता के बाद से कई बड़े राजनैतिक आंदोलन देखे हैं। उनमें से कुछ ने सरकारें हिला दीं, कुछ अख़बारों की सुर्ख़ियों में ही दम तोड़ गए। फ़र्क़ अक्सर एक ही बात से पड़ता था कि आम आदमी घर से निकला या नहीं। जेपी का आंदोलन हो, 2011 में अन्ना का रामलीला मैदान हो या किसानों का साल भर चला धरना – तीनों में मुद्दा किसी न किसी रूप में हर घर तक पहुँच गया था। अब हर जगह यह सवाल पूछा जा रहा है कि कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) और राहुल गांधी के 'वोट चोरी' अभियान को जनता का साथ क्यों नहीं मिल रहा। सवाल जायज़ है, पर उसके भीतर एक मान्यता छिपी है कि साथ मिला ही नहीं। उसे परखे बिना आगे बढ़ना ठीक नहीं होगा।

परखने पर पहली बात यह निकलती है कि सीजेपी को जनता का साथ मिला था औरखूब मिला। मई 2026 में बने इस व्यंग्यात्मक संगठन के इंस्टाग्राम फ़ॉलोअर हफ़्ते भर से कम में 2.2 करोड़ से ऊपर पहुँच गए। द वीक ने लिखा कि 20 जुलाई को, संसद के मानसून सत्र के पहले दिन, देश भर से हज़ारों लोग दिल्ली आए। एनईईटी-यूजी 2026 के पेपर लीक पर हफ़्तों जंतर-मंतर पर धरना चला औरपीटीआई के हवाले से डीटी नेक्स्ट ने ख़बर दी कि 25 जुलाई को शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस्तीफ़ा दे दिया। फ्री प्रेस जर्नल के मुताबिक सीजेपी उनके इस्तीफ़े को पहले से 'अनिवार्य' माँग बता रही थी। जो आंदोलन मंत्री की कुर्सी ले जाए, उसे जन-समर्थन से वंचित कहना अन्याय होगा। पेपर लीक की चोट भी सीधी थी, क्योंकि वह उन परिवारों पर पड़ती है जिनके बच्चे बरसों तैयारी करते हैं।

दिक़्क़त बाद में शुरू हुई। आउटलुक के मुताबिक 10 अक्टूबर को सीजेपी ने मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफ़े की माँग पर दूसरी लहर चलाई। मुद्दा था मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण, यानी एसआईआर। पेपर लीक में हर माँ-बाप को अपना नुक़सान दिखता है। मतदाता सूची की बहस में पहले समझाना पड़ता है कि नुक़सान क्या है और किसका है। फ़र्क़ मेरे अनुमान से यहीं पड़ा। यह किसी सर्वे का नतीजा नहीं, मेरा अपना अंदाज़ा है।

10 अक्टूबर की भीड़ पर फ़ैसला सुनाने से पहले यह देख लेना चाहिए कि उस दिन दिल्ली कैसी थी। एएनआई की ख़बर (डेवडिस्कोर्स पर) के अनुसार पुलिस ने जंतर-मंतर पर अनुमति देने से पहले ही मना कर दिया था। उसका कहना था कि वहाँ एक हज़ार लोगों की ही गुंजाइश है। द वीक लिखता है कि साठ हज़ार से ज़्यादा सुरक्षाकर्मी लगाए गए, चार किलोमीटर के दायरे में इंटरनेट बंद रहा, मेट्रो के कई स्टेशन बंद हुए और सुप्रीम कोर्ट को दख़ल देकर कहना पड़ा कि आम यात्रियों को बेवजह तकलीफ़ न दी जाए। सीजेपी के तीन बड़े नेता विमान से उतरते ही हिरासत में थे। यूएनआई ने सैकड़ों प्रदर्शनकारियों के हिरासत में लिए जाने की ख़बर दी। ऐसे घेरे में कितने लोग पहुँच पाते, यह कोई नहीं बता सकता।

फिर भी तस्वीर को पूरी तरह सफ़ाई देने लायक़ नहीं कहा जा सकता। द प्रिंट के अनुसार 14 अक्टूबर को सह-संयोजक आशुतोष रंका और सौरव दास को पाँच दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया। जंतर-मंतर तब तक प्रदर्शन-स्थलों की सूची से हटाया जा चुका था। 16 अक्टूबर की रिपोर्ट में द वीक ने बताया कि कनॉट प्लेस के प्रदर्शन में बहुत कम लोग थे और पहले चरण वाला खिंचाव ढीला पड़ रहा था। आंदोलन के तीनों बड़े चेहरे उस समय या तो हिरासत में थे या घर में पाबंद। वहाँ मौजूद एक प्रदर्शनकारी ने ख़ुद माना कि पहले जितने लोग नहीं हैं।

सीजेपी की एक कमज़ोरी उसके जन्म में ही थी। नेशनल हेराल्ड ने प्रशांत किशोर को उद्धृत किया है कि शुरुआती दिनों में यह सोशल मीडिया का अभियान भर था, जिसका कोई स्थापित सांगठनिक ढाँचा नहीं था। साथ में उन्होंने इसे बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार और महँगाई से उपजी बेचैनी का संकेत भी बताया था। न्यूज़ अरेना के मुताबिक रंका ने साफ़ कहा कि सीजेपी पार्टी नहीं है, सीधे चुनाव नहीं लड़ेगी, बस अपनी माँगों से सहमत ताक़तों का साथ देगी। द न्यूज़ मिनट और न्यूज़लॉन्ड्री के साझा न्यूज़लेटर में कांग्रेस के भीतर की हिचक का ज़िक्र है। पार्टी को आंदोलन की वैचारिक ज़मीन साफ़ नहीं दिखती थी और आम आदमी पार्टी से उसकी निकटता भी खटकती थी। जिसके पास ढाँचा न हो और जिसकी दिशा पर साथी भी उलझन में हों, उसके लिए ऑनलाइन लोकप्रियता को लंबी लड़ाई में बदलना मुश्किल होता है।

विपक्ष की आपसी खींचतान मुझे सबसे ज़्यादा खटकती है। 1977 में विपक्ष ने अपने दलों के झंडे उतारकर जनता पार्टी बना ली थी। इस बार आउटलुक की रिपोर्ट के मुताबिक कांग्रेस आंदोलन के पहले महीने में जंतर-मंतर से जान-बूझकर दूर रही औरपार्टी के भीतर अन्ना आंदोलन की याद का हवाला दिया गया, यानी डर कि ग़ैर-राजनीतिक आंदोलन कल प्रतिद्वंद्वी बन सकता है। यह रिपोर्टों में बताया गया कारण है, पार्टी का आधिकारिक बयान नहीं। द स्टेट्समैन ने छापा कि जब राहुल गांधी संसद-यात्रा के बाद प्रधानमंत्री आवास के पास धरने पर बैठे, तो आम आदमी पार्टी की आतिशी ने उसे कांग्रेस और भाजपा के बीच 'फ़िक्स्ड मैच' कह दिया। 10 अक्टूबर के प्रदर्शन से कांग्रेस दूर रही और आउटलुक के अनुसार सीजेपी भी राहुल के घर हुई इंडिया गठबंधन की बैठक में नहीं गई। राहुल ने खुलकर सीजेपी का समर्थन पहली बार 14 अक्टूबर को किया, द प्रिंट के मुताबिक तब, जब रंका और दास जेल भेजे जा चुके थे। जब एक ही मुद्दे पर लड़ने वाले एक-दूसरे को शक से देखें, तो आम आदमी क्यों माने कि यह जनता की लड़ाई है, मंच की नहीं?

राहुल गांधी के 'वोट चोरी' अभियान का हाल फ्री प्रेस जर्नल में 30 सितंबर को वरिष्ठ पत्रकार भावदीप कांग ने बयान किया है। उनकी दलील है कि मताधिकार भारतीयों के लिए लगभग पवित्र चीज़ है, इसलिए उसके हनन पर जनता को सड़क पर होना चाहिए था। मगर जिन राज्यों में एसआईआर हुआ, वहाँ पार्टियों के अपने कार्यक्रमों के सिवा कोई प्रदर्शन नहीं दिखा। उनके मुताबिक लोगों का गुस्सा असुविधा पर है- ख़राब सॉफ़्टवेयर, उलझी प्रक्रिया, काम के बोझ से दबे बूथ-स्तर के अधिकारी। यह परेशानी सब दलों के समर्थकों ने उठाई, इसलिए लोगों के मन में बात 'वोट चोरी' की कम, 'गड़बड़-झंझट' की ज़्यादा बनी। कांग्रेस के भीतर भी कई नेता अभियान को लेकर आश्वस्त नहीं हैं, यह भी वे लिखती हैं। यह एक टिप्पणीकार का आकलन है, कोई सर्वे नहीं।

क़ानूनी ज़मीन भी आसान नहीं। बार एंड बेंच के अनुसार सुप्रीम कोर्ट ने 27 मई 2026 को बिहार और दूसरे राज्यों के एसआईआर को वैध ठहराया। लाइव लॉ के हवाले से द क्विंट ने लिखा कि अदालत ने आयोग का यह अधिकार अनुच्छेद 324 और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 21(3) में पाया। न्यूज़लॉन्ड्री की रिपोर्ट में एक और बात है जो दोनों पक्षों को ध्यान में रखनी चाहिए। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ ने कहा कि आयोग नागरिकता की जाँच कर सकता है, पर उसका अंतिम फ़ैसला नहीं कर सकता औरसूची में पहले से दर्ज मतदाताओं के पक्ष में अनुमान रखना होगा। अदालत की मुहर के बाद केवल नारे से काम नहीं चलता, प्रमाण चाहिए। यह मेरी राय है।

पर विपक्ष के हाथ ख़ाली भी नहीं हैं। इंडियन एक्सप्रेस की 23 सितंबर की रिपोर्ट कहती है कि चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने दस महीनों में एसआईआर से जुड़े फ़ैसलों पर कम से कम 14 बार लिखित आपत्ति दर्ज की, इस शिकायत के साथ कि फ़ैसले उनकी जानकारी के बिना हुए। पीटीआई की रिपोर्ट (द प्रिंट पर) के मुताबिक आयोग का जवाब है कि उसके सब आदेश पूरी वैधानिकता से जारी हुए और सदस्यों के सवाल सामान्य प्रशासनिक कामकाज का हिस्सा हैं। महाराष्ट्र में मुख्य निर्वाचन अधिकारी के आँकड़े, जो फ्री प्रेस जर्नल ने छापे, बताते हैं कि 9.78 करोड़ मतदाताओं में से 7.71 करोड़ प्रारूप सूची में आए और क़रीब 2.07 करोड़ के गणना-प्रपत्र न मिलने से उनके नाम बाहर रहे। राहुल गांधी ने इसे 'वोट चोरी' कहा (पीटीआई)। अधिकारियों का कहना है कि प्रारूप सूची से बाहर होना स्थायी विलोपन नहीं है और दावे-आपत्ति का मौक़ा 30 सितंबर तक था। आईएएनएस के अनुसार बाहर रहे नामों में क़रीब 34 लाख मृतकों के और 17 लाख दोहरी प्रविष्टियों के भी थे। यानी झगड़ा आँकड़ों की व्याख्या का भी है औरसवाल पूछने का हक़ विपक्ष को है। उसका यह तर्क भी वज़नी है कि जब राजधानी में प्रदर्शन की जगह ही हटा दी जाए और नेता हिरासत में हों, तब ख़ाली सड़क को जन-समर्थन के अभाव का सबूत नहीं माना जा सकता।

एक बात ईमानदारी से कहनी होगी। आज की जन-भावना नापने वाला कोई भरोसेमंद राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण मुझे नहीं मिला। 'जनता ने साथ नहीं दिया' इसलिए मापे हुए तथ्य से ज़्यादा अनुमान है, जो प्रदर्शनों की रिपोर्टों और टिप्पणीकारों की राय से बनता है। उसी अनुमान पर चलूँ तो मुझे लगता है कि पेपर लीक की चोट सबको दिखती थी, जबकि वोटर लिस्ट का दर्द ज़्यादातर लोगों को असुविधा लगा। सीजेपी के पास ढाँचा नहीं था और कांग्रेस से उसकी बनी नहीं। राहुल का आरोप जितना बड़ा था, उसके साथ रखे गए प्रमाण उतने बड़े नहीं दिखे, कम से कम अदालत और आम लोगों की नज़र में। फिर भी न सीजेपी की उपलब्धि छोटी है, न आयोग के भीतर की दरारें हल्की। एक युवा आंदोलन ने मंत्री से इस्तीफ़ा दिलवाया और आयोग के कामकाज पर बहस दोबारा खुल गई। आगे क्या होगा, मैं नहीं कहता। इतनी लंबी उम्र में अपनी भविष्यवाणियाँ मैंने ख़ुद ग़लत होती देखी हैं। हाँ, इतना पक्का है कि जनता को कोसने से आंदोलन आगे नहीं बढ़ते।



भिखारी ठाकुर सांस्कृतिक मंच पर दिसंबर माह में रजत जयंती वर्ष



आरा । भिखारी ठाकुर सांस्कृतिक मंच पर दिसंबर माह में रजत जयंती वर्ष 2006 के तहत, होने वाले भिखारी ठाकुर लोक रंगरस सह सम्मान 2006 कार्यक्रम को लेकर तैयारी समिति की बैठक की गई। लोक गायक अविनाश पांडेय की अध्यक्षता में सहर के ढेरों कलाकार,पत्रकार, साहित्य श्रजक, चित्रकार इस अवसर पर उपस्थित हुए। इस अवसर पर उपस्थित बुद्धिजीवी वर्ग ने रजत जयंती लोक रंगसर कार्यक्रम में भोजपुरिया कला संस्कृति के कलात्मक वैचारिक पक्ष को प्राथमिकता देने और उसे प्रदर्शित करने की बातें रखीं। इस अवसर पर प्रख्यात पत्रकार कमलेश पाण्डेय,सरफाज अहमद ने अपने संबोधन क्रम में भिखारी ठाकुर के मौलिक रचित नाटकों के प्रसांगिकताऔर प्रदर्शन पर बातें रखीं। वहीं वरिष्ठ चित्रकार रौशन राय ने कहा कि इस अवसर पर भोजपुरी पेंटिंग प्रतियोगिता सह प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाना चाहिए। भोजपुरी संस्कृति में व्यापक संभावनाएं हैं जो संस्कृति का हिस्सा है। इस अवसर पर पुरे कार्यक्रम का खाका तैयार किया गया जिसमें एक स्मारिका का वैचारिक खाका भी तैयार हुआ। वहीं वरिष्ठ रंगकर्मी नाटककार चंद्रभूषण पाण्डेय ने भी सभा को संबोधित करते हुए रजत जयंती कार्यक्रम को सांस्कृतिक सामाजिक और कला के प्रति समर्पित बताया।बोले कि भोजपुरिया कला कर्म व भिखारी ठाकुर की नाटकों का कोई तोड़ नहीं है।हम अपने कला संस्कृति को लेकर सजग बने यहीं सभी से अनुरोध है। संबोधन क्रम को जारी रखते हुए कुमार अजय सिंह के दो पुस्तकों , एतिहासिक गांव एकौना और भोजपुरी कथा लोक का लोकार्पण भी हुआ। सभी सम्मानित सदस्यों ने लेखक को इस पहल के लिए शुभकामनाएं मंगलकामनाएं बधाईयां दी। सभा को संचालित वरिष्ठ पत्रकार नरेंद्र सिंह ने किया और कहा कि रजत जयंती 2026 अपने कला संस्कृति और मंचन को लेकर जिला में एक कलात्मक संवाद स्थापित करने में सहयोगी बनेगा। इस अवसर पर उपस्थित लोगों में मुख्य आलोक कुमार सिंह,नंद किशोर राम, स्वामी विक्रमादित्य ,डा शीलभद्र , सर्वजीत कुमार, गांधी जी आदि उपस्थित थे।



लौह पुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल के जन्मदिन पर सादर नमन

डॉ. कीर्तिवर्धन



संकल्प आपका रजवाड़ों को, राष्ट्र हित में साधेंगे,
हम जाति-धर्म की तोड़ दीवारें, राष्ट्र प्रेम में बाँधेंगे।
तुष्टिकरण नहीं होगा, न हिन्दू- मुस्लिम की बातें,
राष्ट्र सनातन का अनुयाई, भगवा से पहचानेंगे।

पद चिन्ह बनाये जो तुमने, उन पर राष्ट्र अग्रसर है,
राष्ट्रवाद सिद्धांत हमारा, जाति धर्म से बढ़कर है।
तुष्टिकरण खेल किसी का, सब पर अब भारी है,
विकास की राह पर बढ़ना, राष्ट्र इसी पर तत्पर है।

भेड़ खाल में अनेक भेड़िये, घर के भीतर छिपे हुए,
भेड़ों के संरक्षण दायित्व, खुद भेड़ियों को दिये गये।
नहीं समर्थन में कोई था, किसने उनको बिठलाया ?
वही भेड़िये खाल बेचते, दुश्मन के हाथों बिके दिखे।

बाग़ी बिखरे रजवाड़ों को, जोड़ लौह पुरुष कहलाये,
पर गाँधी नेहरू के सम्मुख, क्यों कमजोर नज़र आये ?
एक ज़रा सी नादानी ने, भारत को भारत से तोड़ दिया,
आजाद हुए अंग्रेज़ी से पर, हालात बहुत बदतर पाये।

आज के दर्पण



साधीं सपना के , टूट जाईं जन।
आस का लव के अब बुताईं जन
गम के पागल नदी का रव
कवनो तितली के दिल दुखाईं जन।
भूख जल्लाद बन के आई,
चाह के आह के भुलाईं जन।
फूल में ,फल में , बाग में विचरीं,
बाकी कलियन से दिल लगाईं जन।
चांद के पार चले के सोचीं,
प्रीत के रीत बा डेराईं जन।
दिल के रोवल आ
आंख के जौहर,
लोर के गीत अब
सुनाईं जन।





भोजपुरी राज्य संन्दो
(हिन्दी साप्ताहिक)
प्रकााक, मुद्रक व स्वामी जनार्दन सिंह द्वारा मनसा पब्लिकेान 2/256, विराम खण्ड गोमतीनगर, लखनऊ (उत्तर प्रदो) से मुद्रित एवं 14/249, विकास नगर, लखनऊ–226022 (उत्तर प्रदो) से प्रकाति।
सम्पादक
जनार्दन सिंह
मो. 9695325051
8953087725
उप सम्पादक
तौफिक अहमद खान
मो. 8826887869
R.N.I.No.UPHIN/2015/67882
email: bhojpurirajyasandesh@gmail.com
समस्त विवादों का क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा